E-ISSN: 2706-8927
P-ISSN: 2706-8919
www.allstudyjournal.com
IJAAS 2025; 7(9): 99-101
Received: 19-07-2025
Accepted: 22-08-2025

डॉ. मनोज कुमार साह
सहायक प्राध्यापक, मैथिली विभाग, रामकृष्ण महाविद्यालय, ल.ना.मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा, बिहार, भारत

Corresponding Author:
डॉ. मनोज कुमार साह
सहायक प्राध्यापक, मैथिली विभाग, रामकृष्ण महाविद्यालय, ल.ना.मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा, बिहार, भारत

'ललबिठुआ'क समीक्षात्मक अध्ययन

मनोज कुमार साह

DOI: https://www.doi.org/10.33545/27068919.2025.v7.i9b.1687

सारांश
लोककथाएँ मानव जीवन और समाज के अनुभवों का दर्पण मानी जाती हैं। इनमें सुख–दुःख, उम्मीदें और संघर्ष का चित्रण मिलता है, जो समाज की सोच और जीवन मूल्यों को उजागर करता है। इन कथाओं में पात्रों और घटनाओं के माध्यम से जीवन के सत्य और सामाजिक संदेश सामने आते हैं। प्रस्तुत अध्ययन में विभिन्न लोककथाओं के आधार पर मानव जीवन और समाज की समझ को विश्लेषित किया गया है। इससे यह स्पष्ट होता है कि लोककथा केवल मनोरंजन का साधन नहीं, बल्कि जीवन और समाज को दिशा देने वाला साहित्यिक स्रोत भी है।

कुटशब्दः लोककथाएँ, मानव जीवन, समाज, संघर्ष, जीवन मूल्य, साहित्यिक स्रोत

प्रस्तावना
मैथिली साहित्य जगतमे व्यंग्य अदौ कालसँ चलि आबि रहल अछि। ई एकटा अपन फराक विधा बना चुकल अछि। व्यंग्य कथा, कविता, उपन्यास, नाटक आदि सभ विधामे नीक जकाँ समाहित भऽ जाइत छैक। तै साहित्यकार ऐकर प्रयोग धरल्लेसँ कऽ रहल छैक। जकर मूल कारण व्यंग्य, मनुक्ख सीधा मानस पटल पर प्रहार करैत छैक, जाहिसँ मनुक्खक सोंचब–विचारब पर मजबुर भऽ जाइत अछि। कखनो–कखनो समाजमे देखल जाइत जे व्यंग्यक उलटा प्रतिक्रिया भऽ जाइछ अछि। उचित व्यंग्यक मनुक्ख जीवनक पथ पर अग्रसर होइत छैक, मुदा अनुचित व्यंग्य मनुक्खसँ हैवान बनमामे कनिको देर नहि होमय दैत छैक। कोनो रचनाकारके ई बुझब आवश्यक अछि जे व्यंग्य उचित हेबाक चाही, अनुचित नहि।
कविशेखराचार्य ज्योतिरीश्वरक कृत प्रसिद्ध नाटक (प्रहसन) 'धूर्त्त समागम' सँ मैथिली साहित्य जगतमे व्यंग्यक श्री गणेश भेल। ई परिपाटी एखनधरि तक निरंतर चलि आबि रहल अछि। आदिकाल, मध्यकाल, आधुनिक कालमे खूब नीक जकाँ व्यंग्यक प्रयोग भेल। मिथिलामे एकटा पुरान कहबी छैक–'सभके सबकिछु प्राप्त नहि होइत छैक'। एहिठाम इयैह कहबी चरितार्थ भऽ रहल अछि। व्यंग्यक नीव देनिहार भने कवि शेखराचार्य ज्योतिरीश्वर छथि, मुदा हास्य–व्यंग्यक सम्राट प्रो. हरिमोहन झा मानल जाइत छथि। एहि बीच एकटा बड्ड पैघ समयक अन्तराल छैक। अनेको साहित्यकार भेलथि। अपन–अपन रचनामे व्यंग्यक खूब प्रयोग कयलथि, मुदा जे ख्याति प्रो. हरिमोहन झाके प्राप्त भेलनि ओ किनको नहि भऽ सकलनि। एकर अतिरिक्त किछु व्यंग्यात्मक कथा सेहो चर्चित रहलनि–कांचीनाथ झा 'किरण' क' 'मधुरमनि', पं. श्यामानन्द झाक बेङक राष्ट्रीय महासभामे, चन्द्रनाथ मिश्र अमरक 'कन्तू भाइक कन्टर' आ 'भूखन भइक चुटुक्का', गोविन्द चौधरीक' उत्लूरी, अन्तराल, वर्त्तिनी, धीरेन्द्रक 'गीध', 'मनुक्ख विकायत', मायानन्दक 'हंसीक वजट', सोमदेवक–सरकारी नौकरी, हंसराजक 'अपराधी' आदि कतेको कथा व्यंग्यक लेल प्रशंसनीय रहल अछि। अस्तु!
राज कुमार मिश्रक 'ललबिठुआ' (व्यंग्यात्मक कथा–संग्रह), पोथी एहिठाम हमर आलोच्य विषय थिक। हिनक जन्म 16 जनवरी 1963 ई के धर्मपुर, लोहनारोड, दरभंगा जिलाक अंतगर्त भेलनि। विज्ञानसँ स्नातक कयलाक उपरांत बैंक ऑफ इण्डियामे प्रबन्धक रूपमे कार्यरत छथि। मैथिली साहित्य भंडारके अपन स्पनासँ सुशोभित करैत आबि रहल छथि। हिनक तीन गोट कविता संग्रह–दू ठोप नोर–1996 ई., अँकटा–मिसिया, 1999 ई., प्रवासी स्वर–2002 ई. अर दू गोट व्यंग्य–संग्रह–बहिरा नाचय अपने ताले 2012 ई., ललबिठुआ–2019 ई. धरि तक अपन अनमोल कृतिसँ समृद्ध कयलनि! ललबिठुआ विशुद्ध व्यंग्यात्मक कथा–संग्रहक पोथी थिक। अपन कुश्राध बुद्धि मादे तीक्ष्ण व्यंग्यसँ पाठकक मनोरंजन करैत छथि। एहि पोथीमे कुल तेरह गोट व्यंग्यात्मक कथा संग्रहीत छैक–इलाज, एक दिनुक डायरी, बजारक भाओ, निन्नक प्रकोप, आनन्दमे बिघ्न, मुसकी, टाइम पास, बेली दाइ, ठट्ठा, सोना, एक सिपाहीक प्रेम–पत्रा, ओसूली, शौचालय आदि। कल–पुर्जो के समान सदैव क्रियाशील रहते हैं। यंत्र के कल पुर्जो व्यंग्यकार 'इलाज' कथा मादे दाम्पत्य जीवन घटनाके चित्राांकित करैत छथि। पत्नी के गप्प नहि पचैत अछि तऽ कहैत छथि–'चलू अहाँके डॉक्टरसँ देखा दै छी।'[1] नीक व्यंग्य कयने छथि।

हुनक पत्नी होमियोपैथीक दवाई के चाह बना क' सहायजीक कनियाँ के पिया दैत छनि। एहि व्यंग्यात्मक कथामे बहुत रास मर्म छुपल छनि। ऐक बेर पुनः स्त्रीक शिक्षा पर प्रश्नवाचक चिन्ह उठैत छैक। अनमेल विवाह पर प्रश्नवाचक चिन्ह उठैत छैक? एहन बात नहि छैक एहि विषय–वस्तु पर अधारित मैथिली साहित्यमे रचना नहि भेल छैक? बहुत रास रचना छैक। एकर जीवन्त उदाहरण 'कन्यादान' उपन्यास लेल जा सकैछ। अपन कथाक नव शैली आ शिल्प लऽ कऽ जाहि रूपसँ मिश्र उपस्थित भेलथि, पाठकके मनोरंजन प्रदान करैछ? जाहि गप्प लऽ कऽ अपन पत्नी पर व्यंग्य करैत छैक, वर्तमान समयमे ब्वनदेसमत विभागक डाक्टर परमर्श दैत छैक। दोसर दिश एहि संसारमे मनोनुल आइ धरि। कू किनको सबकिछु प्राप्त नहि भेलनि, जँ किनको प्राप्त भेल हेतनि तऽ ओ अपवादमे हेताह। आइ एहितरहक कथा लिखबाक प्रयोजन पड़ि रहल अछि तऽ एकर उत्तरदायी एहि समाज आ वर्तमान उपड़का पीढ़ि के जाइत छनि। मनुक्ख संयुक्त परिवारके त्यागि एकल परिवारमे बेसी विश्वास रखैत छथि, जकर परिणाम नाना–तरहक बाधाके झेलय पड़ैत छनि। लेखक अपन कथा मादे बहुतोक संदेश दऽ रहल अछि, तऽ दोसर दिश सावधान हेबाक ईशारा सेहो कऽ रहल छथि। 'एक दिनुक डायरी' कथा लेखकक दिनचर्या के वर्णन करैत अछि। कोनो लेखकके रचना करबाक हेतु एकाग्रताक आवश्यकता होइत छैक, एकर अभाव खटकैत छनि। एहि गप्पक वर्णन कथा मादे वर्णीत करैत छैक। मनुक्ख दिनचर्या सभ दिन एक समान नहि भऽ सकैछ, ई ध्रूव सत्य थीक, तथापि अपन दाम्पत्यमे किछु बदलाव अवश्य कयल जा सकैछ। कतोहु–कतोहु व्यंग्य तऽ झलकैत अछि यथा–'कत' कालिदासक शकंतुला आ कत' ई मोबाइलवाली नायिका!'।[2] कथामे भाषा शौली, शिल्प शैलीक अतिरिक्त उद्देश्यक सेहो मुख्य स्थान होइत छैक। उद्देश्यक विहीन कथाक लोकप्रिय नहि भऽ पबैत अछि।

दुःख, दर्द, मर्म आ संवेदनासँ भरल–पुरल 'बजारक भाओ' कथा थिक। एकटा गरीब दाम्पत्य जीवनक व्यथा जाहि रूपे कथाकार चित्राांकित करैत छथि ओहिसँ पाठकक हृदय विभोर भऽ जाइत अछि। महगाई कोना अपन आगिमे गरीब परिवारके झुलसबैत छैक, एहि कथा मादे स्पष्ट रूपसँ झलकैत अछि। तरकारीक भाव चढ़लाक उपरान्त पत्नी अपन पति पर तीक्ष्ण व्यंग्यसँ प्रहार करैत अछि–'हरियर तरकारी अखन बड़ महग छै। एखन खाइवाला नहि भेलैए। अहाँके तरकारीक दाम नहि बूझल अछि। अहाँ कि जान' गेलियै बजारक भाओ। कहियो झोरा ल' क' जइयौ तखन ने बजारक थाह लागत।'[3] जाहि रूपे कथाकार एकटा गरीब दाम्पत्य जीवन व्यथाके उजागर कयलनि, ओकरा नकारल नहि जा सकैत अछि, मुदा जँ ओहिसँ ऐक डेग पाछू हटल जाय तखन दूधाआ पानि फराक भऽ जाइत छैक। किसान खेती करब छोड़ि देलनि, मजदुर नहि भेटैत छैक, वर्तमान समयमे दस बिग्हा वाला किसानके खेतीसँ गुजर–बसर नहि चलैत छैक। कोनो काज–प्रयोजनमे बिना जमीन हटौने कोनो गुजारा नहि होइत छैक, जे पूर्णतः खेती पर आश्रित छैक। इयैह मूल कारण थिक जे किसान खेतीसँ पलायन भऽ गेलथि। एहि सत्यके सेहो नकारल नहि जा सकैछ। भूतपूर्व प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री 'जय किसान जय जवान' के नारा देलथि, ताहि हेतु एखन धरि सराहनीय छथि, जे किसानक संदर्भमे किछु सोंचलथि। मुदा हुनक सोंच राजनीतिक काल पेटमे समा गेलनि। भारतक भूतपूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी, जय किसान, जय जवान, जय विज्ञान क नारा देलथि। ओ अपन कालमे किसानक किछु दर्द आ मर्म बुझलनि, जवान आ विज्ञान पर हुनक मुख्य फोकस छलनि आ देश हित के लेल कार्य कयलथि। हुनक काज के समस्त भारतीय सदैव स्मरण रखतनि। किसानक संदर्भ जँ सरकार नहि सोंचैत छैक, तै मँहगाई दिनोदिन आसमान छूअत से तय थिक। भारतके कृषि प्रधान देश कहल जाइत छल। आब एहिठामसँ कृषि लूप्त भऽ रहल छैक, जे एकटा विचारणीय प्रश्न छैक? कथा पाठकके सोंचय पर मजबुर करैत छैक, हिनक ई विशेषता थिक। पत्रात्मिक शैलीमे रचित 'निन्नक प्रकोप' कथा चारि गोट घटना के चित्राांकित करैत, निन्नक प्रकोपसँ बचाव हेतु प्रेरित करैत अछि। पहिल घटना निन्न एतेक प्रबल जे विवाहक मंडपमे मंत्रा तक उच्चारण नहि कऽ पबैत छैक, तकर दृष्तांत देखबामे अबैत अछि। दोसर घटना मादे निन्न एतेक प्रबल भऽ जाइत छैक, जे परिक्षार्थी परीक्षाकक्षमे सूति रहैत छैक, परीक्षा परिणाममे शून्य पबैत अछि, तकर अपन व्यंग्यात्मक कथा मादे चित्रांकित करैत अछि। तेसर घटना ट्रेनमे निन्न आबि जेबाक कारण, मधुबनीसँ झंझारपुर उतरबाक जगह पर निर्मली पहूँच जाइत छैक। निर्मलीसँ पुनः झंझारपुर अयबाक बदलामे निन्न प्रबल भऽ जाइत छनि तऽ ओ पुनः मधुबनी पहूँच जाइत छैक। अर्थात् जतयसँ यात्राक प्रस्थान कयलनि घुमा–फिरा कऽ ओहिठाम पहूँच जाइत छैक। चारिम घटना प्लेनमे पायलट के निन्न आबि जेबाक कारण पटनाक बदला इमरजेंसी लाइन्डिग दरंभगा हवाई अड्डामे करैत अछि। एहि कथाक अंतमे निन्नक प्रकोपसँ बचाव हेतु पाठकके उपाय सोंचबाक लेल कहैत अछि। कथाकार मुलतः उद्देश्य इयैह छनि जे जीवनमे सदिखन अपन काम–काज प्रति सजग रही, नहितँ लक्ष्यसँ लक्ष्यहीन होयबामे कनिको समय नहि लगैत छैक। कथाकार अपन कथा मादे आमजनके एकटा पैघ संदेश दऽ रहल अछि, जे वर्तमान समयमे एकर आवश्यकता अछि। एहि प्रसंगमे हिन्दीक एकटा पुरण कहबी थिक–''जो सो गया वो खो गया, जिसने जागा उसी ने पाया।''

हिनक अगिला कड़ीक कथा क्रिकेट जगत पर खास कऽ चीयर गर्ल पर 'आनन्दमे विघ्न'–कथाक मादे व्यंग्यात्मक तीक्ष्ण प्रहार करैत अछि। क्रिकेट जगतमे भारतक खेलाड़ीके जे हाल अछि, एहि कथा मादे स्पष्ट रूपसँ झलकैत अछि। हिनक व्यंग्यात्म कटाक्ष के देखल जा सकैछ–''हारैत–हारैत बी.सी.सी.आइ. सोचलक जे एकटा तेहन टुर्नामेन्ट करी जाहिमे हारि दुआरे खेलाड़ी आ दर्शकक मोन छोट नहि होनि आ तखन आइ. पी. एल. सन टुर्नामेन्टक खोज भेल।

टीमक नाम राजस्थान ताहिमे खेलाड़ी वेस्ट इंडिजक, टीमक नाम चेन्नइ खेलाड़ी राँचीक, नाम कोलकाता खेलाड़ी मेलबार्न (आस्ट्रेलिया) क। एहनामे हारि–जीतसँ केकरा सुख–दुःख हेतै? रहि–रहि मैदानमे होहकारा होइत रहै छै। लोक नाचल लगैत अछि। लोकके ताहिसँ आनन्द होइत छैक।''[4]

यात्राा वृतांक दृष्टांत 'मुसकी' कथामे देखाओल गेल अछि। अपन कथा मादे मुसक कऽ बाजब जीवनमे कतेक कष्टदायक होइत छैक, एहि व्यंग्यात्मक कथा मादे प्रतीत होइत अछि। 'हरदम घुघना किए लटकौने रहै छे ?...हरदम मुँहपर कने–कने मुसकी दैत रही। तोहर घुघनावाला मुँह देखिक इंटरव्यूवाला झूर–झमान भ' जाइत हएत।'[5] तीक्ष्ण व्यंग्य अछि। कथाकार कथाक मादे व्यंग्यक संग हास्य सेहो प्रकट करैत अछि।

आधुनिकतावादसँ समाजक बदलैत परिदृश्यके 'टाइम पास' कथा मादे चित्राांकित कयल गेल अछि। कथाकारके रेलवे स्टेशन पर जे दृश्य–परिदृश्य सोझामे अबैत छैक, तकर अपन विलूप्त हास्य रससँ उपस्थित करैत अछि। एहि देशक विलूप्त भऽ रहल सभ्यता–संस्कृतिके रक्षा करबाक कथाक मूल उद्देश्य थिक। कथामे कतहु भोजनक जे सभ्यता–संस्कृति अछि ओ वर्तमान समयमे सम्पूर्ण विश्वक धरोहर अछि। एहिठामक संस्कृतिके आनदेशक लोक अनुसरण करैत अछि। जखन अपन देशक लोक स्वयं नष्ट कऽ लेत ई नीक गप्प नहि थिक। पुरूषक काम वासना लिप्सा के 'बेली दाइ' कथामे दृष्टिगोचर होइत अछि। कामुक प्रवृति भगवान समस्त जीव–जन्तुमे देने छथि। तखन अन्य प्राणीसँ मनुक्ख एकटा भिन्न प्राणी थिक। मनुक्खके लोक–लाज, नीक–बेजाय समझबाक–बुझबाक झमता छैक। व्यंग्यात्मक कथा कोना पुरूष जाति पर प्रहार करैछ, ओ देखल जा सकैछ–'हे, कोनो मौगी–मेहरिसँ दूरे रहब। स्त्राी बड़ मोहिनी होइत अछि।

खटसँ मोन दोचित्त क' देत।'[6]

वर्तमान समयमे स्त्री–पुरूष एक्के संगे काम–काज करैत अछि। कथाकार के एहि तरहक कथा लिखबाक कियक प्रयोजन पड़लनि?, ई एकटा विचारनीय प्रश्न थिक? वर्तमान समयमे एखनो बहुत पुरूष एहन छैक जे पर स्त्रीके देखि मोन प्रफुल्लित भऽ जाइत छनि। कामुक लिप्सा जागृत भऽ जाइत छनि से, नहि हेबाक चाही। हमरा जनतबे पर–स्त्री हीरा समान होइत छैक, जे देखब चमकदार आ जँ उठा कऽ चाइट लिअ तखन प्राण निकलने दोसर कोनो उपाये नहि। तहिना पर–स्त्री बाहरसँ जतेक नीक लगैत छनि, ओतेक अंदर नीक नहि होइत छैक, हुनक सम्पर्कमे रहलासँ विनाशक अतिरिक्त दोसर कोनो उपाय नहि थिक। अपन व्यंग्यात्मक कथा मादे कथाकार काम भावना के अपन वशमे रखबाक संदेश दैत छैक, कामुक प्रवृति के कखनो अपना ऊपर हाबी नहि होमय दियौन।

व्यंग्यकार 'ठट्ठा' कथा मादे महिला उत्पीड़नक कानून सी.बी. एक्ट(छेड़–छाड़ अधिनियम)क आलोचना करैत अछि। उपन हास्य रससँ पाठकके मोन सेहो अह्लादित करैत छैक। ई कथा दूटा पैघ समस्या दिश इंगित करैत छैक–पहिल जे सी.सी. एक्ट कानूनमे पुरूष अनावश्यक फँसि सकैत अछि। पुरूषक बचाव हेतु एहि कानूनमे नहिके बराबर गूंजाइश छनि। जे वर्तमान समयमे एकर खूब दरूपयोग भऽ रहल छैक। दोसर शिक्षा व्यवस्था पर प्रश्न ठाढ़ होइत छैक जे एखनो डिग्रीधारी तऽ बहुत रास छैक, मुदा ज्ञानक घोर अभाव छनि। कथाकार जाहि तरहे कथाके चित्राांकित कयलनि निसंदेह पुरूष वर्गके सकांक्ष रहबाक आवश्यकता छनि।

एकटा पुरान कहबी छैक–'अनकर चाऊर दालि आ अप्पन पेट', 'सोना' कथा मादे स्पष्ट रूपसँ झलकैत अछि। मिथिलाक लोक भोज–भातमे देह तकके ओसरि दैत छैक। मिथिलाक भोज–भातक व्यंजनके विशिष्ट रूपे वर्णन कयने छथि। कथाकार कथाकड़ीके आगू बढ़बैत मोनक भाव तरंगके कथा जगतमे पड़ोसि कऽ राखि देने छथि। हुनक कथा लिखबाक अपन शैली छनि। शैली आ कथोपकन आ कथा–वस्तु लऽ लेखक जाहि रूपसँ उपस्थित भेलथि देखल जा सकैछ–''की भेल? अहाँ त' हमर प्राण–ज्ञान छन्न क' देलहुँ। भरि राति आँखि मुननहि उठि–उठि ठाढ़ भ' जाइत छलहुँ आ सोना–सोना चिचिआइत छलहुँ। कोनो खराप सपना–तपना देखलहुँ अछि की? कतेक बेर कहलहुँ अछि जे भोज–भातमे ओतेक नहि खाएल करू त' से हमर गप्पक मोजरे नहि दै छी।''[7] एहिसँ स्पष्ट प्रतीत होइत जे समाजक ऐहन लोक पर व्यंग्य करैत छथि जे मंगनी के वस्तु लेबाक हेतु भाखूर माँछ जकाँ ऊपर दिश मूँह खोलने रहैत छैक। एहि तरहक समाजक दृष्टि समाज आ राष्ट्रक विकासमे बाधा उत्पन्न करैत अछि। समाजक समुचित विकास नहि भऽ पबैत अछि। लोकक मनोवृत्तिके सरकारो नीक जकाँ बुझैत अछि, तै ठोस कदम उठैबासँ पाछू हटैत अछि। हुनक व्यंग्यात्मक कथा बहुत रास संदेश दैत, समाजके सकांक्ष सेहो कऽ रहल अछि।

एकटा सिपाही सदिखन लोकक रक्षा हेतु जतय–ततय भटकैत रहैत छैक। कखनो चोर–डाकू तऽ कखनो बदमाशक पाछू करैत रहैत छनि जँ ओहिसँ उबरल तऽ नेतालोकनि के आगू–पाछू करैत–करैत कोना दिन–रातिक समय बिति जाइत छैक, पते नहि चलि पबैत छैक। की होइत छैक पावनि–तिहार किछु नहि बूझि पबैत अछि। कथाकार अपन व्यंग्यात्मक कथा 'एक सिपाही प्रेम–पत्रा' मादे सिपाहीक जीवनमे वेलेन्टाइन डे पर व्यंग्य करैत अछि। एहि कथामे सिपाहीक दिनचर्या जाहि हास्यापद तरहे रखलनि सुरक्षा व्यवस्था पर प्रश्न उठैत छैक? कथाकार अपन सहज आ सरल भाषामे अनेक तरहक गप्प रखैत अछि। अपन व्यंग्यसँ पाठकके कोना आह्लादित करैछ, देखल जा सकैछ–''जे पहाड़सँ अयलाह अछि से गिरिधर, जे दुब्बर छथि से दुबरेशजी, जे कनेमने चुप्प रहैत छथि से गुम्मा महाशय, जे हाईस्कूल धरि पढ़ल से विद्वानजी कहबै छथि।''[8] जँ एहि कथाक प्रसंगमे किछु कहल जाए तँ कथाकार वेलेन्टाइन डेके श्राध कयने छथि।

'ओसूली' आधुनिक कवि पर व्यंग्यात्मक आ हास्यापद कथा थिक। कोना लोक कविक नाम पर किछु संस्था खोलि, देशभरिमे लोकके ठकैत छैक, तकर सुंदर वर्णन भेटैत अछि। आधुनिकता आ यथार्थसँ परिचय करबैत छथि। एहि कथा मादे कथाकारक मूल उद्देश्य छनि, जे भाषा आ साहित्य कोनो एक वा दू–चारि गोटाक नीजी संम्पत्ति नहि थिक। भाषा आ साहित्य के जीवंत रखबाक अछि, तखन नव लेखकके सेहो स्थान आ सम्मान देबए पड़त। जँ दू–चारि गोटे पर सीमित राखि दैत छियनि तखन कोनो भाषा आ साहित्य के कालगर्त जयबामे कनिको समय नहि लगतनि। अपन व्यंग्यात्मक कथा मादे लेखक भाषा आ साहितयके जीवंत राखऽ चाहैत छथि।

आजादीक सतहत्तर सालक बादो एहि देशमे शौचालयक समस्या खटकैत अछि। कथाकार 'शौचालय' कथामादे बहुत किछु हास्यापद व्यंग्य करैत छथि। कतहु भारतक स्वच्छता अभियानके दुर्दशा पर प्रश्न उठबैत छथि? तऽ कतहु अपन कथा मादे शौचालयक अभावमे मनुक्खक समस्याके वर्णन करैत छैक।

कथाकार जाहि रूपसँ व्यंग्यात्मक कथा ल' क' उपसिथ्त भेलथि, ओहि व्यंग्यमे कतहु–कतहु तीक्ष्ण कटाक्ष सेहो प्रतीत होइत छनि। हम पूर्वमे चर्च कऽ चुकल छी व्यंग्य सार्थक आ निर्रथक सेहो भऽ सकैत अछि। व्यंग्य पक्ष आ विपक्ष भऽ सकैत छैक, मुदा एतवा बुझबामे कोनो भांगट नहि व्यंग्य भावके उद्भेदन करैत छैक।

राज कुमार मिश्र जाहि रूपें व्यंग्यात्मक कथा मादे पाठकके अह्लादित करवाक चेष्टा करैत छथि, एतबा तँ सतय थीक जे हुनक अपन जीवनक अनुभव छनि। पाठकके अपन हास्य–रसक मादे खूब हँसेबाक चेष्टा करैत छनि, मुदा कथाक अंत होइत–होइत यू टर्न (न) मारि दैत छैक। तै ठहाकाक हँसी नहि हँसि पबैत अछि। एकर अर्थ ई नहि बुझल जाय जे कथामे रोचकता नहि छनि, पाठकके गुदगूदी अवश्य लगैत छनि। हुनक कथ्य, शिल्प, कथोपकथन पाठक हेतु एकटा गम्भीर आ विचारणीय प्रश्न ठाढ़ करैत अछि। समाजके चिन्हब, परखब आ स्वयं सकांक्ष रहब, हुनक एहि व्यंग्यात्मक कथा–संग्रहक विशेषता थिक। हुनक समस्त रचना मैथिली साहित्य भंटारके समृद्ध, पल्लवित आ सुशोभित करैत छैक।

संदर्भ

1. मिश्र, राज कुमार; ललबिठुआ; प्र.–नवारम्भ पटना/मधुबनी; प्र. सं.–2019; पृ. सं.–09
2. वैह; पृ. सं.–20
3. वैह; पृ. सं.–21
4. वैह; पृ. सं.–35
5. वैह; पृ. सं.–40
6. वैह; पृ. सं.–56
7. वैह; पृ. सं.–79
8. वैह; पृ. सं.–80–81